कक्षा 9

राजस्थान का स्वतंत्रता आंदोलन एवं शौर्य परंपरा

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर

कक्षा 9
राजस्थान का स्वतंत्रता आंदोलन एवं शौर्य परंपरा

राजस्थान का स्वतंत्रता आंदोलन एवं शौर्य परंपरा

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर

पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति

राजस्थान का स्वतंत्रता आंदोलन एवं शौर्य परंपरा

संयोजक

प्रोफेसर बी. एम. शर्मा

पूर्व अध्यक्ष, राजस्थान लोक सेवा आयोग, अजमेर

लेखकगण

प्रोफेसर सोहनलाल मीना

विभागाध्यक्ष, राजनीति विज्ञान विभाग

जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर

डॉ. आलोक कुमार श्रीवास्तव

परीक्षा नियंत्रक एवं शैक्षणिक समन्वयक,

हरिदेव जोशी पत्रकारिता और

जनसंचार विश्वविद्यालय, जयपुर

डॉ. नरेन्द्र नाथ

सह आचार्य, राजनीतिशास्त्र

डूंगर महाविद्यालय, बीकानेर

डॉ. पयोद जोशी

सह आचार्य, राजनीतिशास्त्र

माणिक्यलाल वर्मा राजकीय महाविद्यालय,

भीलवाड़ा

प्राक्कथन

भारत का राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन विश्व इतिहास का एक गौरवशाली अध्याय है। विराट जन सहभागिता के साथ संचालित इस मुक्ति संग्राम ने न केवल भारत के लिए स्वराज हासिल किया, बल्कि इसने राष्ट्र–निर्माण, सामाजिक रूपांतरण, न्यायोचित आर्थिक विकास तथा लोकतंत्र पर आधारित सुराज की स्थापना की ऊर्जा भी संरचित की। अतः स्वातंत्र्योत्तर भारत को समझने के लिए स्वतंत्रता संग्राम का सम्यक् अध्ययन आवश्यक है।

1857 की क्रांति में छावनियों के विद्रोही सैनिकों ने आम किसानों के सहयोग से ब्रिटिश साम्राज्य की चूलें हिला दीं। यहां से क्रांतिकारी राष्ट्रवाद की वह धारा फूटी, जिसने कवियों और राजनीतिक कार्यकर्ताओं को अदम्य साहसिक कार्रवाईयों के लिए प्रेरित किया। किसानों और जनजातियों के साथ–साथ रजवाड़ों की समूची प्रजा राजनीतिक आंदोलनों में कूद पड़ी। जन संघर्षों की इस शृंखला की परिणति देश की आजादी में हुई। इसके साथ ही देशी रियासतों का एकीकरण भी राजस्थान राज्य के रूप में हुआ।

राजस्थान में जन संघर्ष की यह चेतना स्वतंत्रता के पश्चात आम जन की शौर्य परंपरा में प्रतिफलित हुई। सैन्य अभियानों और आतंकविरोधी कार्रवाईयों में राजस्थान के अनेक सपूतों के बलिदान ने भारत गणराज्य की स्वतंत्रता और अखण्डता की सुरक्षा की है। राजस्थान में यह संघर्ष चेतना और शौर्य परंपरा जनसाधारण की संस्कृति का अंग बन गए हैं, जिसका पारायण कर राजस्थान के विकास में अहम् भूमिका निभायी जा सकती है।

कक्षा–9 के विद्यार्थी प्रस्तुत पुस्तक के माध्यम से भारत के राष्ट्रीय आंदोलन के स्वरूप, शैली, प्रयोजन, रणनीति आदि का अध्ययन कर सकेंगे। राजस्थान में संचालित मुक्ति संग्राम के विविध संदर्भ है। यहां शेष ब्रिटिश भारत की तरह औपनिवेशिक आधीनता तो थी ही, साथ ही सामंतवाद भी विद्यमान था। राजस्थान में दोहरी गुलामी से संघर्ष के अध्ययन के साथ साथ विद्यार्थी राजस्थान के रणबाकुरों के अदम्य साहस तथा वीरों की शौर्य परम्परा का अध्ययन भी कर सकेंगे। आशा है, प्रस्तुत पुस्तक विद्यार्थी जगत् के लिए उपयोगी साबित होगी।

संयोजक
प्रोफेसर बी.एम. शर्मा
पूर्व अध्यक्ष, राजस्थान लोक सेवा आयोग, अजमेर

राजस्थान का स्वतंत्रता आंदोलन और शौर्य परम्परा

विषय कोड–79
पूर्णांक–100

अध्याय–1 : 1857 की क्रांति **18**

नसीराबाद में क्रांति, नीमच में क्रांति, एरिनपुरा और आउवा की क्रांति, मेवाड़ में क्रांति की गूंज, कोटा में क्रांति, अन्य राज्यों में क्रांति की गूँज, सलूम्बर और कोठारिया का योगदान, 1857 की क्रांति की असफलता के कारण, 1857 की क्रांति की असफलता के परिणाम।

अध्याय–2 : राजस्थान के क्रांतिकारी **18**

डूंगजी–जवाहरजी, सीकर, लोठूजी निठारवाल, सीकर, अमरचंद बांठिया, बीकानेर, विजयसिंह पथिक, बिजौलिया, अर्जुनलाल सेठी जयपुर, केसरीसिंह बारहठ, शाहपुरा, कुंवर प्रतापसिंह बारहठ शाहपुरा, बालमुकुन्द बिस्सा, जोधुपर, सागरमल गोपा, जैसलमेर, नानाभाई खांट, रास्तापाल (डूंगरपुर), 'सरदार' हरलालसिंह, झुंझुनूं, कप्तान दुर्गाप्रसाद, नीम का थाना, जानकी देवी बजाज, सीकर, अंजना देवी चौधरी, सीकर, रतन शास्त्री, जयपुर, रमा देवी, जयपुर, कालीबाई, डूंगरपुर, किशोरी देवी।

अध्याय–3 : राजस्थान के प्रमुख किसान आंदोलन **12**

बिजौलिया आन्दोलन, बेगूं किसान आंदोलन, मेवाड़, भरतपुर किसान आंदोलन, मेव किसान आंदोलन, अलवर किसान आंदोलन एवं नीमूचाणा हत्याकाण्ड, बूंदी राज्य में किसान आन्दोलन, जयपुर राज्य में किसान आन्दोलन, मारवाड़ किसान आंदोलन, बीकानेर किसान आंदोलन।

अध्याय–4 : राजस्थान में जनजातियों के आंदोलन **12**

मेर विद्रोह, भील विद्रोह, उदयपुर राज्य में मोतीलाल तेजावत के नेतृत्व में आन्दोलन, मीणा विद्रोह।

अध्याय–5 : राजस्थान में जनजागृति और प्रजामण्डल **18**

राजस्थान में प्रजामण्डलों की स्थापना, प्रजामण्डलों की स्थापना, जोधपुर में जन आन्दोलन, बीकानेर में जन आन्दोलन, जैसलमेर में जन आन्दोलन, मेवाड़ में जन आन्दोलन, कोटा में जन आन्दोलन, बूंदी में जन आन्दोलन, जयपुर में जन आन्दोलन, अलवर में जन आन्दोलन, भरतपुर में जन आन्दोलन, धौलपुर में जन आन्दोलन, करौली में जन आन्दोलन, अन्य राज्यों में जन आन्दोलन, प्रजामण्डलों का मूल्यांकन।

अध्याय–6 : राजस्थान का एकीकरण **10**

मत्स्य संघ का निर्माण, राजस्थान संघ का निर्माण, मेवाड़ का राजस्थान संघ में विलय, वृहत् राजस्थान का निर्माण, मत्स्य संघ का विलय, सिरोही का प्रश्न, अजमेर का विलय।

अध्याय–7 : राजस्थान की शौर्य परंपरा **12**

स्वतंत्रता पश्चात राजस्थान में शौर्य–परम्परा की निरंतरता, राजस्थान के परमवीर चक्र विजेता प्रमुख वीर सेनानी, शहीद मेजर पीरू सिंह शेखावत, शहीद मेजर शैतान सिंह, राजस्थान के महावीर चक्र विजेता प्रमुख वीर सेनानी, सूबेदार

चूनाराम फागड़िया, शहीद सैनिक ढोकलसिंह, ब्रिगेडियर रघुवीर सिंह राजावत, कर्नल उदय सिंह भाटी , ले. कर्नल हणूत सिंह, ले. कर्नल सवाई भवानी सिंह, ग्रुप कैप्टन चंदन सिंह, नायक सुगन सिंह, नायक दिगेन्द्र कुमार परस्वाल, राजस्थान के अशोक चक्र विजेता प्रमुख वीर सेनानी, राजस्थान के कीर्ति चक्र, शौर्य चक्र, वीर चक्र, सेना मेडल और विशिष्ट सेवा मेडल विजेता प्रमुख वीर सेनानी, पुलवामा हमला और राजस्थान के वीर योद्धा, राजस्थान के शहीद– (1) रोहिताश लाम्बा (2) भागीरथ (3) नारायणलाल गुर्जर (4) जीतराम गुर्जर (5) हेमराज मीणा।

निर्धारित पुस्तक :

राजस्थान का स्वतंत्रता आंदोलन और शौर्य परंपरा : माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर।

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1	1857 की क्रान्ति	1–13
2	राजस्थान के क्रांतिकारी	14–26
3	राजस्थान के प्रमुख किसान आंदोलन	27–36
4	राजस्थान में जनजातियों के आंदोलन	37–47
5	राजस्थान में जनजागृति और प्रजामण्डल	48–61
6	राजस्थान का एकीकरण	62–68
7	राजस्थान की शौर्य परम्परा	69–79
	संदर्भ ग्रंथ सूची	80